B.Com (H)
P2 - A/cs (H)
Paper - III BRF

प्रो॰ धनंजय कुमार
सहायक प्राध्यापक
वाणिज्य विभाग
V.S.J. महाविद्यालय राजनगर
(मधुबनी)

Unit - II

Lecture Series - No - 03

Contract of Sale

Meaning and Difference Between Sale and Agreement to Sell.

माल विक्रय अधिनियम, 1930 के अनुसार "माल विक्रय अनुबंध एक ऐसा अनुबंध है, जिसके अंतर्गत विक्रेता मूल्य के बदले किसी वस्तु या माल का स्वामित्व क्रेता को हस्तांतरित करता है, या हस्तांतरित करने का ठहराव करता है।" Sec. 4(1).

इस प्रकार माल विक्रय संविदा एक ऐसा संव्यवहार है जो पक्षकारों की पारस्परिक सहमति पर आधारित होता है, जिसमें पक्षकार माल की सुपुर्दगी और उसकी कीमत के भुगतान, आदि के संबंध में अपनी इच्छानुसार किसी भी प्रकार की शर्तें आपस में तय करने के लिए पूर्णतः स्वतंत्र होते हैं। माल-विक्रय संविदा में प्रतिफल अर्थात् 'कीमत' केवल धन के रूप में ही व्यक्त होता है।

माल विक्रय अनुबंध के लिए निम्नलिखित तत्वों का होना आवश्यक है:—

(i) दो पक्षकार अर्थात् क्रेता और विक्रेता का होना।

(ii) स्वामित्व का हस्तांतरण

(iii) विषय वस्तु के रूप में 'माल' का होना।

(iv) माल की कीमत (मुद्रा में मूल्य)

(v) विक्रय एवं विक्रय करने का करार (Agreement) दोनों होना।

(vi) स्वतंत्र सहमति का होना तथा

(vii) सशर्त तथा शर्तरहित का होना Sec. 4(2).

Scanned with CamSc

माल विक्रय संविदा में मुख्यतः दो शब्द क्रमशः विक्रय तथा विक्रय के ठहराव का प्रयोग किया गया है अतः माल विक्रय संविदा की धारा 4(3) के अनुसार— "जब विक्रय अनुबंध के अनुसार माल के स्वामित्व का विक्रेता से क्रेता को हस्तांतरण किया जाता है तो इस अनुबंध को विक्रय (Sale) कहा जाता है।"

ठीक इसके विपरीत,— "जब माल के स्वामित्व का हस्तांतरण भविष्य में किसी तिथि को या कुछ शर्तों को पूरा करने के बाद किया जाता है उसे विक्रय का ठहराव (Agreement to sell) कहा जाता है।"

इस प्रकार, विक्रय एवं विक्रय ठहराव के बीच कुछ परिस्थितियों के प्रभाव के आधार पर अंतर स्पष्ट किया गया है, जो इस प्रकार है—

Difference Between Sale and Agreement to Sell.

आधार	विक्रय	विक्रय का ठहराव
1. प्रकृति	यह निष्पादित अनुबंध होता है, अर्थात् निष्पादन पहले ही हो जाता है।	जबकि यह निष्पादीय अनुबंध होता है; अर्थात् ठहराव का निष्पादन शेष रहता है।
2. स्वामित्व का हस्तांतरण	इसमें माल का स्वामित्व अनुबंध होते ही क्रेता को हस्तांतरित हो जाता है।	जबकि इसमें माल का स्वामित्व एक अवधि के पश्चात् या शर्त के पूर्ण होने पर हस्तांतरित होता है।
3. अधिकार	इसमें पूर्ण स्वामित्व क्रेता को प्राप्त हो जाता है; परिणामतः वह वस्तु का प्रयोग कर सकता है।	जबकि इसमें स्वामित्व का हस्तांतरण नहीं होता है, परिणामतः क्रेता व विक्रेता एक दूसरे के विरुद्ध वाद प्रस्तुत कर सकता है।
4. शर्त	यह शर्तरहित होता है	जबकि यह शर्तयुक्त होता है।

Scanned with CamSc

	विक्रय	विक्रय का ठहराव
5. जोखिम	इसमें अंतरण माल की बिक्री हो जाने पर माल की क्षति की जोखिम क्रेता पर हस्तांतरित हो जाती है.	जबकि इसमें माल हस्तांतरण के पूर्व तक जोखिम विक्रेता पर ही रहती है.
6. मूल्य के लिए वाद.	इसमें क्रेता यदि मूल्य का भुगतान नहीं करता है, तो विक्रेता उस पर मूल्य वसूल करने के लिए वाद चला सकता है.	जबकि इसमें केवल विक्रेता हर्जाने के लिए वाद चला सकता है, मूल्य वसूल करने का नहीं.
7. क्रेता का दिवालिया होना	इस स्थिति में, इसमें विक्रेता को क्रेता द्वारा खरीदा हुआ माल उसके ऑफिशियल रिसीवर के हवाले करना होगा.	जबकि इसमें विक्रेता क्रेता को माल देने से इंकार कर सकता है. क्योंकि माल के स्वामित्व का हस्तांतरण नहीं होता है.
8. विक्रेता का दिवालिया होना.	इस स्थिति में क्रेता सरकारी प्रापक से माल प्राप्त करने का अधिकार रखता है. क्योंकि उसे माल का स्वामित्व अंतरित हो चुका है.	जबकि इसमें क्रेता माल पाने का अधिकार नहीं रखता है, केवल अपने आनुपातिक अंश के लिए दावा कर सकता है, क्योंकि उसे स्वामित्व का हस्तांतरण नहीं किया गया है.
9. पुनः विक्रय	इस स्थिति में क्रेता माल का पुनः बिक्री आसानी से कर सकता है.	जबकि इसमें क्रेता को माल का पुनः बिक्री करने में कठिनाई होती है. क्योंकि अनुबंध भंग होने पर ठहराव समाप्त हो जाता है.

Scanned with CamScanner